وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ
और ज़मीन में कोई चौपाया नहीं मगर अल्लाह के ज़िम्मे उस की रोज़ी है और वो उस के दाइमी

مُسْتَقَرَّهَا وَ مُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦
ठिकाने और आरज़ी ठिकाने को जानता है। सब कुछ साफ साफ बयान करने वाली किताब (लौहे महफूज़) में है।

وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ
और वही अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया छे दिन में

اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ
और उस का अर्श पानी पर था ताके वो तुम्हें आज़माए के तुम में से कौन

اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ
अच्छे अमल वाला है। और अगर आप केहते हैं के यक़ीनन तुम ज़िन्दा कर के उठाए

مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ
जाओगे मौत के बाद तो ज़रूर काफिर कहेंगे के ये नहीं है

اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ
मगर खुला जादू। और अगर हम उन से अज़ाब मुअख्खर कर दें

اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ
एक मालूम वक्त तक के लिए तब भी वो यक़ीनन कहेंगे के किस ने अज़ाब को रोक रखा है? सुनो! जिस दिन

يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا
वो अज़ाब उन के पास आएगा तो उन से हटाया नहीं जाएगा और उन्हें घेर लेगा वो अज़ाब जिस का

ع بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٨ ع وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً
वो मज़ाक़ उड़ा रहे थे। और अगर इन्सान को हम अपनी तरफ से रहमत चखाएं

ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ۝٩
फिर उस से उस को छीन लें, तो यक़ीनन वो मायूस नाशुकरा बन जाता है।

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ
और अगर हम उसे नेअमत चखाएं किसी तकलीफ के बाद जो उसे पहोंची हो तो ज़रूर वो कहेगा के मुझ से

السَّيِّاٰتُ عَنِّىْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۝١٠ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ
बराइयाँ दूर हो गईं। यक़ीनन वो इतराने वाला, फख्र करने वाला है। मगर वो लोग

صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ

जिन्हों ने सब्र किया और नेक अमल करते रहे। उन के लिए मग़फिरत है

وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝۱۱ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى

और बड़ा अज्र है। शायद आप छोड़ दें उस के बाज़ हिस्से को जो आप की तरफ वही किया जा रहा

اِلَيْكَ وَ ضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ

है और आप का सीना उस की वजह से तंग हो रहा है, ये इस वजह से के वो केहते हैं के इस पर कोई खज़ाना

عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ

क्यूं नहीं उतारा गया या उस के साथ कोई फरिशता क्यूं नहीं आया? आप तो सिर्फ डराने वाले हैं।

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ وَّكِيْلٌ ؕ ۝۱۲ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ

और अल्लाह हर चीज़ पर कारसाज़ है। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने इस को घड़ लिया?

قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا

आप फरमा दीजिए के तुम उस के जैसी घड़ी हुई दस सूरतें ले आओ और तुम

مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝۱۳

उन को भी बुला लो जिन की तुम ताक़त रखते हो अल्लाह के अलावा अगर तुम सच्चे हो।

فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ

फिर अगर वो तुम्हारी बात का जवाब न दे सकें तो जान लो के जो आप की तरफ उतारा गया है वो अल्लाह के इल्म से है

اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝۱۴

और ये के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है। फिर क्या तुम इस्लाम लाते हो?

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا نُوَفِّ

जो दुन्यवी ज़िन्दगी चाहेगा और उस की ज़ीनत, तो हम उन को उन के आमाल का दुन्या में

اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ۝۱۵

पूरा पूरा बदला देंगे और उन के लिए उस में कमी नहीं की जाएगी।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ

उन लोगों के लिए आखिरत में सिवाए आग के कुछ नहीं होगा।

وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا

और बेकार हो जाएंगे वो अमल जो उन्हों ने दुन्या में किए और बातिल होंगे वो जो वो

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ

करते थे। क्या फिर वो शख्स जो अपने रब की तरफ से रोशन रास्ते पर है और अल्लाह की तरफ से

شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ط

एक शाहिद उस के साथ साथ है और उस से पेहले मूसा (अलैहिस्सलाम) की किताब पेशवा और रहमत थी।

اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ط وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ

ये लोग उस पर ईमान रखते हैं। और जो उस के साथ कुफ्र करेगा गिरोहों में से

فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ج فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ق اِنَّهُ

तो दोज़ख उस की वादे की जगह है। फिर आप उस की तरफ से शक में न रहिए। यक़ीनन ये

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾

हक़ है आप के रब की तरफ से लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ط اُولٰٓئِكَ

और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े। ये लोग

يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَ يَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ

अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और गवाही देने वाले कहेंगे के ये वो हैं

الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ج اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ

जिन्हों ने अपने रब पर झूठ बोला। सुनो! अल्लाह की लानत है

عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾ لا الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

ज़ालिमों पर। उन पर जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं

وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ط وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

और उस में कजी तलाश करते हैं। और वो अखिरत के भी मुन्किर हैं।

اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ

ये लोग ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते

وقف لازم

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ م يُضٰعَفُ

और उन के लिए अल्लाह के अलावा कोई हिमायती नहीं होगा। उन के लिए

لَهُمُ الْعَذَابُ ط مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا

अज़ाब दुगना किया जाएगा। वो सुनने की ताकत नहीं रखते थे और न

كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ۝۲۰ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
देख सकते थे। यही हैं जिन्हों ने अपनी जानों को खसारे में डाला

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝۲۱ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ
और उन से खो गए वो जो वो घड़ा करते थे। यक़ीनन ये

فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝۲۲ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
आखिरत में सब से ज़्यादा खसारा वाले हैं। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ
और नेक काम करते रहे और अपने रब की तरफ आजिज़ी की। ये लोग

الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝۲۳ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ
जन्नती हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। दोनों जमाअतों का हाल ऐसा है

كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ
जैसा के अन्धा और बेहरा और देखने वाला और सुनने वाला। क्या दोनों मिसाल के ऐतेबार से बराबर

مَثَلًا ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝۲۴ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا ع ۲ ۱۲ ۲
हो सकते है? क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और यक़ीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को भेजा

اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۡ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۲۵ ۙ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ
उन की क़ौम की तरफ के मैं तुम्हारे लिए साफ साफ डराने वाला हूँ। ये के इबादत मत करो मगर अल्लाह की।

اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ۝۲۶ فَقَالَ
यक़ीनन मैं तुम पर एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से डरता हूँ। फिर आप

الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ
की क़ौम में से काफिर सरदारों ने कहा के हम आप को नहीं देखते

اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ
मगर अपने जैसा इन्सान और हम आप को नहीं देखते के आप का इत्तिबा किया मगर उन लोगों ने जो

اَرَاذِلُنَا بَادِىَ الرَّاْىِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا
हम में सब से ज़्यादा ज़लील हैं सरसरी नज़र में। और हम तुम्हारे लिए अपने पर कोई फज़ीलत भी

مِنْ فَضْلٍۢ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ۝۲۷ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ
नहीं देखते, बल्के हम तुम्हें झूठा गुमान करते हैं। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारी

اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَاٰتٰىنِىْ رَحْمَةً

क्या राए है अगर मैं अपने रब की तरफ से रोशन रास्ते पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ से

مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ

रहमत अता की हो, और वो रोशन रास्ता तुम पर छुपा दिया जाए। तो क्या हम तुम से इस हिदायत को ज़बर्दस्ती चिपका दें इस हाल

لَهَا كٰرِهُوْنَ ۝۲۸ وَ يٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ

में के तुम उस को नापसन्द करते हो? और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम से इस पर किसी माल का सवाल नहीं करता।

اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ

मेरा अज्र तो अल्लाह के ज़िम्मे है और मैं उन को धुतकारने वाला नहीं हूँ जो ईमान

اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّىْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا

लाए हैं। यक़ीनन वो अपने रब से मिलने वाले हैं लेकिन मैं तुम्हें ऐसी क़ौम देख रहा हूँ

تَجْهَلُوْنَ ۝۲۹ وَ يٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ

जो जहालत की बातें करते हो। और ऐ मेरी क़ौम! कौन बचाएगा मुझ को अल्लाह की गिरिफ्त से

اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝۳۰ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ

अगर मैं उन्हें धुतकार दूँ? क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और मैं तुम से नहीं केहता के मेरे पास

خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّىْ

अल्लाह के खज़ाने हैं और न मैं ग़ैब जानता हूँ और न मैं ये केहता हूँ के मैं

مَلَكٌ وَّلَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِىْۤ اَعْيُنُكُمْ

फरिश्ता हूँ और न मैं ये केहता हूँ उन लोगों के मुतअल्लिक़ जिन को तुम्हारी निगाहें हक़ीर समझती हैं के

لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ

अल्लाह उन को हरगिज़ कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह खूब जानता है उस को जो उन के दिलों में है।

اِنِّىْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۳۱ قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا

यक़ीनन तब तो मैं ज़ालिमों में से बन जाऊँगा। उन्हों ने कहा ऐ नूह! यक़ीनन आप ने हम से झगड़ा किया, फिर

فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ

आप ने हम से बहोत ज़्यादा झगड़ा कर लिया, इस लिए आप हमारे पास ले आइए वो अज़ाब जिस से आप हमें डरा रहे

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝۳۲ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ

हैं अगर आप सच्चों में से हैं। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के वो अज़ाब तो तुम्हारे पास सिर्फ अल्लाह ही लाएगा

شَآءَ وَمَآ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ ۝٣٣ وَلَا يَنۡفَعُكُمۡ نُصۡحِىۡۤ

अगर वो चाहेगा और तुम उस वक्त अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकोगे। और तुम्हें मेरी नसीहत फाइदा नहीं देगी

اِنۡ اَرَدْتُّ اَنۡ اَنۡصَحَ لَـكُمۡ اِنۡ كَانَ اللّٰهُ يُرِيۡدُ

अगर मैं चाहूं के मैं तुम्हारे लिए खैरख्वाही करूं अगर अल्लाह तुम्हें गुमराह करने का

اَنۡ يُّغۡوِيَكُمۡؕ هُوَ رَبُّكُمۡ قف وَ اِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ۝٣٤ؕ

इरादा करे। वही तुम्हारा रब है। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ افۡتَـرٰٮهُؕ قُلۡ اِنِ افۡتَرَيۡتُهٗ فَعَلَىَّ اِجۡرَامِىۡ

क्या वो केहते हैं के इस नबी ने उस को घड़ लिया है? आप फरमा दीजिए के अगर मैं ने उस को घड़ा है तो मेरे ऊपर मेरा जुर्म है

وَاَنَا بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تُجۡرِمُوۡنَ ۝٣٥ ع وَ اُوۡحِىَ اِلٰى نُوۡحٍ

और मैं तुम्हारे जुर्मों से बरी हूँ। और नूह (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की गई के

اَنَّهٗ لَنۡ يُّؤۡمِنَ مِنۡ قَوۡمِكَ اِلَّا مَنۡ قَدۡ اٰمَنَ

आप की क़ौम में से हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे मगर वो जो ईमान ला चुके

فَلَا تَبۡتَـئِسۡ بِمَا كَانُوۡا يَفۡعَلُوۡنَ ۝٣٦ۚ وَاصۡنَعِ الۡـفُلۡكَ

इस लिए आप मायूस न हों उन हरकतों की वजह से जो वो कर रहे हैं। और आप कशती बनाइए

بِاَعۡيُنِنَا وَ وَحۡيِنَا وَلَا تُخَاطِبۡنِىۡ فِى الَّذِيۡنَ

हमारी आँखों के सामने और हमारे हुक्म से और आप हम से गुफतगू न कीजिए उन के बारे में

ظَلَمُوۡاۚ اِنَّهُمۡ مُّغۡرَقُوۡنَ ۝٣٧ وَيَصۡنَعُ الۡـفُلۡكَ قف

जो ज़ालिम हैं। इस लिए के ये गर्क़ किए जाएंगे। और कशती बना रहे थे नूह (अलैहिस्सलाम)।

وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيۡهِ مَلَاٌ مِّنۡ قَوۡمِهٖ سَخِرُوۡا مِنۡهُؕ قَالَ

और जब कभी आप पर आप की क़ौम में से कोई रईस जमाअत गुज़रती तो वो आप से मज़ाक़ करती। नूह

اِنۡ تَسۡخَرُوۡا مِنَّا فَاِنَّا نَسۡخَرُ مِنۡكُمۡ

(अलैहिस्सलाम) फरमाते के अगर तुम हम से मज़ाक़ करते हो, तो यक़ीनन हम भी तुम से मज़ाक़ करेंगे

كَمَا تَسۡخَرُوۡنَ ۝٣٨ؕ فَسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ مَنۡ يَّاۡتِيۡهِ عَذَابٌ

जिस तरह तुम मज़ाक़ करते हो। अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के किस पर ऐसा अज़ाब आता है

يُّخۡزِيۡهِ وَيَحِلُّ عَلَيۡهِ عَذَابٌ مُّقِيۡمٌ ۝٣٩ حَتّٰٓى اِذَا

जो उसे रूस्वा कर देगा और किस पर दाइमी अज़ाब उतरता है। यहां तक के जब

جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا

हमारा (अज़ाब का) हुक्म आया और तन्नूर जोश मारने लगा तो हम ने कहा के इस में आप सवार करा लीजिए हर

مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَ اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ

क़िस्म से जोड़ा (यानी) दो दो (नर और मादा) और अपने एहल को मगर वो जिन के मुतअल्लिक़ पेहले बात हो

الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝٤٠

चुकी है और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं। और आप के साथ ईमान नहीं लाए थे मगर थोड़े।

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَ مُرْسٰىهَا ؕ

और नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से इस का चलना है और इस का ठेहेरना है।

اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٤١ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ

यक़ीनन मेरा रब बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और ये कशती उन को ले कर चलती रही

كَالْجِبَالِ ۟ وَنَادٰى نُوْحُ ۨابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ

ऐसी मौजों में जो पहाड़ों की तरह थीं। नूह (अलैहिस्सलाम) ने अपने बेटे को पुकारा और वो किनारे में था,

يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٤٢

ऐ मेरे बेटे! तू हमारे साथ सवार हो जा और तू काफिरों के साथ मत रेह।

قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ

बेटे ने कहा अनक़रीब मैं पनाह लूंगा इस पहाड़ पर जो मुझे पानी से बचा लेगा। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَ حَالَ

के आज अल्लाह के अज़ाब से कोई बचा नहीं सकता मगर वो जिस पर अल्लाह रहम करे। और उन दोनों के

بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ۝٤٣ وَ قِيْلَ يٰٓاَرْضُ

दरमियान मौज हाइल हो गई, फिर वो डूबने वालों में से हो गया। और हुक्म आया के ऐ ज़मीन!

ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَ غِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ

तू अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान! तू थम जा, और पानी खुश्क हो गया और मुआमला

الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ

खत्म हो गया और कश्ती ठेहेर गई जूदी पहाड़ पर और कहा गया के ज़ालिम क़ौम का

الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٤ وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ

नास हो। और नूह (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब को पुकारा, फिर कहा ऐ मेरे रब! मेरा बेटा

مِنْ اَهْلِىْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ

मेरे एहल में से था और यक़ीनन तेरा वादा सच्चा है और तू तमाम फैसला करने वालों में बेहतरीन फैसला

الْحٰكِمِيْنَ ۝٣٥ قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ج اِنَّهٗ

करने वाला है। अल्लाह ने फरमाया ऐ नूह! यक़ीनन वो आप के एहल में से नहीं था। इस लिए के उस का

عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْئَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ط

अमल ग़ैर सालेह था। इस लिए आप मुझ से ऐसा सवाल न करें जिस का आप को इल्म नहीं।

اِنِّىْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝٣٦ قَالَ رَبِّ

मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ इस की के तुम जहालत करने वालों में से न हो जाओ। नूह (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़

اِنِّىْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْئَلَكَ مَا لَيْسَ لِىْ بِهٖ عِلْمٌ ط

किया ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस से के मैं तुझ से सवाल करूं ऐसी चीज़ का जिस का मुझे इल्म नहीं।

وَاِلَّا تَغْفِرْ لِىْ وَتَرْحَمْنِىْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٣٧

और अगर तू मेरी मग़फिरत नहीं करेगा और मुझ पर रहम नहीं करेगा तो मैं खसारा उठाने वालों में से बन जाऊँगा।

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ

कहा गया ऐ नूह! आप हमारी तरफ से सलामती और बरकतों के साथ उतर जाइए, आप पर भी

وَ عَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ط وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ

और उन उम्मतों पर भी जो आप के साथ हैं। और बहोत सी उम्मतें हैं अनक़रीब हम उन्हें फाइदा उठाने देंगे,

ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٣٨ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ

फिर उन्हें हमारी तरफ से दर्दनाक अज़ाब पहोंचेगा। ये ग़ैब की खबरों में से

الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ج مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ

है जिसे हम आप की तरफ वही कर रहे हैं, जो आप और आप की क़ौम

وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛ فَاصْبِرْ ۛ اِنَّ الْعَاقِبَةَ

इस से पेहले जानती नहीं थी। इस लिए आप सब्र कीजिए। यक़ीनन अच्छा अन्जाम

لِلْمُتَّقِيْنَ ۝٣٩ ع وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ط قَالَ يٰقَوْمِ

मुत्तक़ियों के लिए है। और क़ौमे आद की तरफ भेजा उन के भाई हूद (अलैहिस्सलाम) को। हूद (अलैहिस्सलाम)

اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ط اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا

ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। तुम तो सिर्फ

معانقة ٩
عند المتأخرين ١٢ الوقف على فاصبر احسن والله اعلم ١٢
ركوع ٤

مُفْتَرُوْنَ ۝٥٠ يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِیَ

झूठ घड़ते हो। ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम से इस पर किसी अज्र का सवाल नहीं करता। मेरा अज्र तो

اِلَّا عَلَى الَّذِیْ فَطَرَنِیْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٥١ وَيٰقَوْمِ

सिर्फ उस अल्लाह के ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? और ऐ मेरी क़ौम!

اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ

तुम अपने रब से इस्तिग़फार करो, फिर उस की तरफ तौबा करो, तो वो तुम पर आसमान को बरसता हुवा

مِّدْرَارًا وَّ يَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا

छोड़ेगा और तुम्हारी मौजूदा कुव्वत में और कुव्वत का इज़ाफा करेगा और मुजरिम बन कर

مُجْرِمِيْنَ ۝٥٢ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ

पुश्त मत फेरो। उन्हों ने कहा ऐ हूद! तुम हमारे पास कोई मोअजिज़ा नहीं लाए और हम अपने माबूदों को

بِتَارِكِیْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٣

तुम्हारे केहने की वजह से छोड़ने वाले नहीं हैं और हम आप पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ

हम नहीं केहते मगर ये के हमारे माबूदों में से किसी ने आप को कोई बुराई लगा दी है।

قَالَ اِنِّیْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّیْ بَرِیْٓءٌ

हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो के मैं बरी हूँ

مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝٥٤ۙ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِیْ جَمِيْعًا ثُمَّ

उन चीज़ों से जिन को तुम शरीक ठेहराते हो। अल्लाह के अलावा। फिर तुम इकट्ठे हो कर मेरे खिलाफ तदबीर कर लो, फिर

لَا تُنْظِرُوْنِ ۝٥٥ اِنِّیْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّیْ وَرَبِّكُمْ ؕ

मुझे मोहलत भी मत दो। यक़ीनन मैं ने अल्लाह पर तवक्कुल किया जो मेरा और तुम्हारा रब है।

مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ

कोई चौपाया नहीं मगर वो (अल्लाह) उस की चोटी पकड़े हुए है। यक़ीनन मेरा रब

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٥٦ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ

सीधे रास्ते पर है। फिर अगर तुम ऐराज़ करो तो मैं ने तुम्हें पहोंचा दिया

مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّیْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ

वो जिस को दे कर मैं तुम्हारी तरफ भेजा गया हूँ। और मेरा रब तुम्हारे अलावा किसी और क़ौम को जानशीन बनाएगा।

وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ حَفِیْظٌ ﴿٥٧﴾

और तुम उस को ज़रा भी ज़रर नहीं पहोंचा सकोगे। यक़ीनन मेरा रब हर चीज़ की हिफाज़त करने वाला है।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّیْنَا هُوْدًا وَّالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ

और जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आया तो हम ने हूद (अलैहिस्सलाम) को और उन लोगों को जो उन के साथ ईमान

بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَ نَجَّیْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِیْظٍ ﴿٥٨﴾

लाए थे अपनी रहमत से नजात दी। और हम ने उन्हें सख्त अज़ाब से नजात दी।

وَتِلْكَ عَادٌ ۗ جَحَدُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ

और ये क़ौमे आद है, जिन्हों ने अपने रब की आयात का इन्कार किया और अल्लाह के पैग़म्बरों की नाफरमानी की

وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِیْدٍ ﴿٥٩﴾ وَاُتْبِعُوْا فِیْ هٰذِهِ

और वो हर ज़ालिम सरकश के हुक्म के पीछे चले। और इस दुन्या में उन के पीछे

الدُّنْیَا لَعْنَةً وَّیَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا

लानत कर दी गई और क़यामत के दिन भी। सुनो! यक़ीनन क़ौमे आद ने अपने रब से

رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿٦٠﴾ ع وَاِلٰی ثَمُوْدَ ركوع ٥

कुफ़्र किया। सुनो! क़ौमे आद का नास हो, हूद (अलैहिस्सलाम) की क़ौम का। और क़ौमे समूद की तरफ भेजा

اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ وقف لازم

उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) को। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो,

مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। उसी ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया

وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِیْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَیْهِ ؕ

और उस ने तुम्हें ज़मीन में आबाद किया तो तुम उस से इस्तिग़फार करो, फिर उस की तरफ तौबा करो।

اِنَّ رَبِّیْ قَرِیْبٌ مُّجِیْبٌ ﴿٦١﴾ قَالُوْا یٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ

यक़ीनन मेरा रब क़रीब, तौबा क़बूल करने वाला है। उन्हों ने कहा के ऐ सालेह! यक़ीनन आप

فِیْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَاۤ اَتَنْهٰىنَاۤ اَنْ نَّعْبُدَ مَا یَعْبُدُ

हमारे अन्दर क़ाबिले उम्मीद थे इस से पेहले। क्या आप हमें रोकते हो इस से के हम इबादत करें उन चीज़ों की

اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِیْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ

जिन की हमारे बाप दादा इबादत करते थे? और यक़ीनन हम उस की तरफ से गेहरे शक में हैं जिस की तरफ

اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٦٢﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ

तुम हमें दावत देते हो। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारी क्या राए है अगर मैं

عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ اٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ

अपने रब की तरफ से रोशन रास्ते पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ से रहमत अता की हो,

يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ قف فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ

फिर मुझे अल्लाह की गिरिफ्त से कौन बचाएगा अगर मैं अल्लाह की नाफरमानी करूं? फिर तुम मुझे नहीं बढ़ाते

غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾ وَ يٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ

सिवाए खसारे के। और ऐ मेरी क़ौम! ये अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए

اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا

निशानी है, तो तुम उस को छोड़ दो के अल्लाह की ज़मीन में खाए और तुम उसे बुराई के साथ

بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾ فَعَقَرُوْهَا

मत छुओ, वरना तुम्हें क़रीबी अज़ाब पकड़ लेगा। फिर उन्हों ने ऊँटनी के पैर काट दिए

فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ط ذٰلِكَ

तो सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मज़े उड़ा लो अपने घरों में तीन दिन। ये ऐसा

وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا

वादा है जो झुठलाया नहीं जा सकता। फिर जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आया तो हम ने सालेह (अलैहिस्सलाम) को

صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا

और उन लोगों को जो आप के साथ ईमान लाए थे हमारी रहमत से

وَ مِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ط اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾

और उस दिन की रूस्वाई से नजात दी। यक़ीनन तेरा रब वो कुव्वत वाला, ज़बर्दस्त है।

وَ اَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا

और ज़ालिमों को चीख ने पकड़ लिया, फिर वो अपने घरों में

فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾ لا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ط اَلَآ

घुटनों के बल पड़े रेह गए। गोया के वो उस में बसे ही नहीं थे। सुनो!

اِنَّ ثَمُوْدَاۡ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ط اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾ ع

यक़ीनन क़ौमे समूद ने कुफ्र किया अपने रब के साथ। सुनो! नास हो क़ौमे समूद के लिए।

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا

और यक़ीनन हमारे भेजे हुए फरिश्ते इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास बशारत ले कर आए तो उन्हों ने कहा

سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾

अस्सलामु अलैकुम। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अस्सलामु अलैकुम, फिर वो नहीं ठेहरे के भुना हुवा बछड़ा ले आए।

فَلَمَّا رَآ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ

फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने उन के हाथ देखे के उस (खाने) तक नहीं पहोंचते तो उन को अजनबी महसूस किया

مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ

और उन की तरफ से खौफ महसूस किया। फरिश्तों ने कहा के आप खौफ न कीजिए, यक़ीनन हम तो क़ौमे लूत की तरफ भेजे

لُوْطٍ ﴿٧٠﴾ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا

गए हैं। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की बीवी खड़ी हुई थी, फिर वो हंस पड़ी तो हम ने उन्हें बशारत दी

بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾ قَالَتْ

इसहाक . की। और इसहाक़ के पीछे याकूब की। वो केहने लगी

يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ

हाए अफसोस! क्या मैं औलाद जनूंगी हालांके मैं बूढ़ी हूँ और ये मेरे शौहर बूढ़े हैं।

اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ

यक़ीनन ये क़ाबिले तअज्जुब चीज़ है। उन्हों ने कहा के क्या तुम तअज्जुब करती हो

مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ

अल्लाह के हुक्म से? अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें तुम एहले बैत पर हैं।

اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ

यक़ीनन वो अल्लाह क़ाबिले तारीफ, बुजुर्ग है। फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से खौफ दूर

الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ

हो गया और उन के पास बशारत आई, तो वो हम से क़ौमे लूत के बारे में झगड़ने

لُوْطٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾

लगे। यक़ीनन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) निहायत बुर्दबार, आहें भरने वाले, तौबा करने वाले थे।

يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ

ऐ इब्राहीम! इस से आप ऐराज़ कीजिए, यक़ीनन आप के रब का हुक्म

رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمۡ اٰتِيۡهِمۡ عَذَابٌ غَيۡرُ مَرۡدُوۡدٍ ﴿۷۶﴾
आ गया। और यक़ीनन उन के पास ऐसा अज़ाब आने वाला है जो लौटाया नहीं जाएगा।

وَلَمَّا جَآءَتۡ رُسُلُنَا لُوۡطًا سِیۡٓءَ بِهِمۡ وَضَاقَ
और जब हमारे भेजे हुए फरिश्ते लूत (अलैहिस्सलाम) के पास आए तो वो उन की वजह से ग़मगीन हुए और उन की

بِهِمۡ ذَرۡعًا وَّ قَالَ هٰذَا يَوۡمٌ عَصِيۡبٌ ﴿۷۷﴾ وَجَآءَهٗ
वजह से तंगदिल हुए और लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ये बड़ा सख्त दिन है। और लूत (अलैहिस्सलाम) के

قَوۡمُهٗ يُهۡرَعُوۡنَ اِلَيۡهِ ؕ وَمِنۡ قَبۡلُ كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ
पास उन की क़ौम आई उन की तरफ तेज़ दौड़ती हुई। और वो पेहले से बुराइयाँ करते

السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوۡمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِىۡ هُنَّ اَطۡهَرُ
थे। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! ये मेरी बेटियाँ ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा

لَكُمۡ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخۡزُوۡنِ فِىۡ ضَيۡفِىۡ ؕ اَلَيۡسَ
हैं, फिर तुम अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के बारे में रूस्वा मत करो। क्या तुम में

مِنۡكُمۡ رَجُلٌ رَّشِيۡدٌ ﴿۷۸﴾ قَالُوۡا لَقَدۡ عَلِمۡتَ مَا لَنَا
से कोई हिदायतयाफ्ता शख्स नहीं? वो केहने लगे यक़ीनन आप को मालूम है के हमें

فِىۡ بَنٰتِكَ مِنۡ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعۡلَمُ مَا نُرِيۡدُ ﴿۷۹﴾
आप की बेटियों में कोई रग़बत नहीं है। और यक़ीनन आप जानते हैं वो जो हम चाहते हैं।

قَالَ لَوۡ اَنَّ لِىۡ بِكُمۡ قُوَّةً اَوۡ اٰوِىۡۤ اِلٰى رُكۡنٍ
लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया काश के मुझे तुम पर कुव्वत होती या मैं किसी मज़बूत क़बीले की तरफ

شَدِيۡدٍ ﴿۸۰﴾ قَالُوۡا يٰلُوۡطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنۡ يَّصِلُوۡۤا
पनाह लेता। उन्हों ने कहा के ऐ लूत! यक़ीनन हम तेरे रब के भेजे हुए फरिश्ते हैं, वो हरगिज़ आप तक

اِلَيۡكَ فَاَسۡرِ بِاَهۡلِكَ بِقِطۡعٍ مِّنَ الَّيۡلِ
नहीं पहोंच सकेंगे, इस लिए आप अपने घर वालों को ले कर रात के किसी हिस्से में सफर कर जाइए

وَلَا يَلۡتَفِتۡ مِنۡكُمۡ اَحَدٌ اِلَّا امۡرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيۡبُهَا
और तुम में से कोई पीछे मुड़ कर न देखे मगर आप की बीवी, के उसे वो अज़ाब पहोंचने वाला है

مَاۤ اَصَابَهُمۡ ؕ اِنَّ مَوۡعِدَهُمُ الصُّبۡحُ ؕ اَلَيۡسَ الصُّبۡحُ
जो उन को पहोंचेगा। यक़ीनन उन के अज़ाब के वादे का वक़्त सुब्ह का वक़्त है। क्या सुब्ह

بِقَرِيْبٍ ﴿۸۱﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا

क़रीब नहीं है? फिर जब हमारे अज़ाब का हुक्म आ गया तो हम ने उस के ऊपर वाले हिस्से को उस के नीचे वाला हिस्सा बना दिया

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ۬ مَّنْضُوْدٍ ﴿۸۲﴾

और हम ने उन के ऊपर मिट्टी के पथ्थर बरसाए, जो लगातार बरस रहे थे।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِىَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

जो निशानज़दा थे तेरे रब के पास। और ये बस्ती ज़ालिमों से कुछ दूर

بِبَعِيْدٍ ﴿۸۳﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ

नहीं है। और मदयन वालों की तरफ उन के भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भेजा। शुऐब (अलैहिस्सलाम)

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ

ने फरमाया के ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं।

وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّىْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ

और तुम नाप और तोल में कमी न करो, इस लिए के मैं तुम्हें अच्छी हालत में देख रहा हूँ

وَّاِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿۸۴﴾ وَيٰقَوْمِ

और मैं तुम पर एक घेरने वाले दिन के अज़ाब का खौफ करता हूँ। और ऐ मेरी क़ौम!

اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا

नाप और तोल को इन्साफ के साथ पूरा पूरा दो और लोगों को उन की

النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۸۵﴾

चीज़ें कम कर के मत दो और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो।

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ۬

अल्लाह की बकीय्या चीज़ें तुम्हारे लिए बेहतर हैं अगर तुम ईमान वाले हो।

وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿۸۶﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ

और मैं तुम पर मुहाफिज़ नहीं हूँ। वो केहने लगे ऐ शुऐब! क्या आप की नमाज़ आप को

تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ

इस का हुक्म देती है के हम छोड़ दें उन को जिन की हमारे बाप दादा इबादत करते थे या ये के हम अपने

فِىْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿۸۷﴾

मालों में करना छोड़ दें जो हम चाहें? यक़ीनन तुम हिल्म वाले, हिदायतयाफता हो।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ

शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ऐ मेरी क़ौम! बतलाओ अगर मैं अपने रब की तरफ से वाज़ेह रास्ते पर हूँ

وَرَزَقَنِىْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ

और उस ने मुझे अपनी तरफ से अच्छी रोज़ी दी हो। और मैं नहीं चाहता के तुम्हारी मुखालफत करूँ

اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ

उन चीज़ों को कर के जिन से मैं तुम्हें रोकता हूँ। मैं तो सिर्फ इस्लाह चाहता हूँ

مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِىْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

जितनी मैं ताक़त रखूं। और मेरी तौफीक़ नहीं है मगर अल्लाह की तरफ से। उसी पर मैं ने तवक्कुल किया

وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝٨٨ وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِىْٓ

और उसी की तरफ मैं रूजूअ करता हूँ। और ऐ मेरी क़ौम! मेरी मुखालफत तुम्हें इस बात की तरफ न ले जाए

اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ

के तुम्हें पहोंच जाए उस जैसा अज़ाब जो क़ौमे नूह या क़ौमे हूद

اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۝٨٩ وَاسْتَغْفِرُوْا

या क़ौमे सालेह को पहोंचा। और क़ौमे लूत तुम से कुछ दूर नहीं हैं। और तुम अपने रब से इस्तिग़फार

رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّىْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ۝٩٠ قَالُوْا

करो, फिर तुम उस की तरफ तौबा करो। यक़ीनन मेरा रब बहोत ज़्यादा रहम करने वाला, महब्बत करने वाला है।

يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ

उन्हों ने कहा के ऐ शुऐब! हम बहोत सी बातें नहीं समझते उस में से जो तुम केहते हो और यक़ीनन हम तुम्हें अपने

فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ز وَمَآ اَنْتَ

दरमियान कमज़ोर देख रहे हैं। और अगर आप का क़बीला न होता, तो हम आप को रज्म कर देते। और आप

عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ۝٩١ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِىْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ

हम पर कुछ भारी नहीं हो। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरा क़बीला तुम पर अल्लाह से

مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّىْ

ज़्यादा भारी है? और तुम ने उस को अपनी पीठ पीछे डाल दिया है। यक़ीनन मेरा रब

بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝٩٢ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ

तुम्हारे आमाल को घेरे हुए है। और ऐ मेरी क़ौम! अपनी जगह पर रेह कर अमल करते रहो,

اِنِّىْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ

मैं भी अमल कर रहा हूँ। अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के किस पर ऐसा अज़ाब आता है जो

يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْۤا اِنِّىْ مَعَكُمْ

उस को रूस्वा कर दे और कौन झूठा है। और तुम मुन्तज़िर रहो, मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने

رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ

वाला हूँ। और जब के हमारा अज़ाब आया तो हम ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को और उन लोगों को जो आप के

اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا

साथ ईमान लाए थे अपनी रहमत से बचा लिया। और उन ज़ालिमों को चीख ने

الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ ۙ كَاَنْ

पकड़ लिया, फिर वो अपने घरों में घुटने के बल पड़े रेह गए। गोया के वो

لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾ ع ٨

उस में बसे ही नहीं थे। सुनो! नास हो मदयन के लिए जिस तरह के क़ौमे समूद का नास हुवा।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾ ۙ

यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा अपने मोअजिज़ात दे कर और वाज़ेह दलील दे कर।

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ

फिरऔन और उस की क़ौम की तरफ, फिर भी वो लोग फिरऔन के हुक्म पर चले।

وَمَاۤ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

और फिरऔन का हुक्म अच्छा नहीं था। वो अपनी क़ौम के आगे आगे क़यामत के दिन चल रहा होगा,

فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿٩٨﴾ وَاُتْبِعُوْا

फिर उन को दोज़ख में दाखिल करेगा। और वो उतरने का बुरा घाट है। और इस

فِىْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ

दुन्या में उन के पीछे लानत कर दी गई और क़यामत के दिन भी। बहोत बुरी मदद है जो

الْمَرْفُوْدُ ﴿٩٩﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ

उन को दी गई। ये उन बस्तियों के क़िस्सों में से कुछ हम आप के सामने तिलावत करते हैं

مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ

जिन में से कुछ खड़ी हुई हैं और कुछ कटी हुई हैं। और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, लेकिन

ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِىْ

वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे, फिर उन के कुछ काम नहीं आए उन के वो माबूद जिन को

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَىْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ

वो अल्लाह को छोड़ कर पुकारते थे जब के आप के रब का अज़ाब

رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۝١٠١ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ

आया। और उन (मुशरिकीन) को सिवाए नुक़सान के उन्हों (माबूदों) ने नहीं बढ़ाया। इसी तरह आप के

رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗٓ

रब की पकड़ होती है जब वो बस्तियों को पकड़ता है जब के वो ज़ालिम होती हैं। यक़ीनन उस की पकड़

اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۝١٠٢ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ

दर्दनाक, सख्त है। यक़ीनन उस में निशानी है उस शख्स के लिए जो आखिरत के

عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ

अज़ाब से डरे। ये वो दिन है के जिस के लिए इन्सानों को जमा किया जाएगा

وَ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝١٠٣ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ

और ये वो दिन है जिस में गवाहों को हाज़िर किया जाएगा। और हम उस को मुअख्खर नहीं कर रहे मगर मुक़र्रर किए हुए

مَّعْدُوْدٍ ۝١٠٤ ؕ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ

वक़्त के लिए। जिस दिन वो आएगा तो कोई शख्स बात नहीं कर सकेगा मगर अल्लाह की इजाज़त से।

فَمِنْهُمْ شَقِىٌّ وَّسَعِيْدٌ ۝١٠٥ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا

फिर उन में से कुछ बदबख्त होंगे और कुछ नेकबख्त होंगे। अलबत्ता जो बदबख्त होंगे

فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ شَهِيْقٌ ۝١٠٦ ۙ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

वो दोज़ख में होंगे, उन के लिए उस में चिल्लाना और सिसकियाँ होंगी। जिस में वो हमेशा रहेंगे

مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ

जब तक के आसमान और ज़मीन बाक़ी हैं, मगर जितना आप का रब चाहे।

اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝١٠٧ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا

यक़ीनन आप का रब वही करता है जिस का वो इरादा करता है। अलबत्ता जो नेकबख्त होंगे

فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

वो जन्नत में होंगे जिस में वो हमेशा रहेंगे जब तक आसमान

وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾
और ज़मीन क़ाइम हैं, मगर जितना आप का रब चाहे। ऐसी अता के तौर पर जो बन्द नहीं की जाएगी।
فَلَا تَكُ فِیْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ
फिर आप शक में न रहिए उस की तरफ से जिन की ये लोग इबादत करते हैं। ये इबादत नहीं करते हैं
اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ
मगर उसी तरह जिस तरह के इस से पेहले उन के बाप दादा इबादत करते थे। और यक़ीनन हम उन को उन का
نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿١٠٩﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى
हिस्सा पूरा पूरा देने वाले हैं इस हाल में के वो कम नहीं किया जाएगा। और यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम)
الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
को किताब दी, फिर उस में इखतिलाफ किया गया। और अगर एक बात आप के रब की तरफ से पेहले हो चुकी
مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِیَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِیْ شَكٍّ مِّنْهُ
न होती तो उन के दरमियान फैसला कर दिया जाता। और यक़ीनन वो उस की तरफ से बड़े शक
مُرِيْبٍ ﴿١١٠﴾ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ
में हैं। और बेशक सब को आप का रब उन के आमाल पूरे पूरे
اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١١﴾ فَاسْتَقِمْ
देगा। इस लिए के वो उन के आमाल से पूरी तरह बाखबर है। इस लिए आप इस्तिक़ामत इखतियार कीजिए
كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ
जैसा आप को हुक्म दिया गया है, और वो लोग भी जिन्हों ने आप के साथ तौबा की है, और तुम दाइरे से न निकलो। यक़ीनन वो
بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٢﴾ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ
तुम्हारे आमाल को देख रहा है। और तुम उन ज़ालिमों की तरफ ज़रा भी मैलान
ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
न करना, वरना तुम्हें आग पहोंच कर रहेगी। और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई हिमायती
مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَیِ
नहीं होंगे, फिर तुम्हारी नुसरत नहीं की जा सकेगी। और आप दिन के दोनों किनारों
النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ
में और रात की इब्तिदाई घड़ियों में नमाज़ क़ाइम कीजिए। यक़ीनन नेकियाँ बुराइयों को

ع ٩

السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَاصْبِرْ

खत्म कर देती हैं। ये याद रखने वालों के लिए याददिहानी है। और आप सब्र कीजिए,

فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۵﴾

फिर यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ायेअ नहीं करते।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ

फिर उन क़ौमों में से जो तुम से पेहले थीं अक़्ल वाले लोग क्यूं न हुए

يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِى الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ

जो ज़मीन में फसाद से रोकते सिवाए थोड़े लोगों के उन में से

اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَاۤ اُتْرِفُوْا فِيْهِ

जिन को हम ने नजात दी? और ज़ालिम लोग उस के पीछे पड़े जिस में उन्हें ऐश मिला,

وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۶﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ

और वो मुजरिम थे। और आप का रब ऐसा नहीं के बस्तियों

الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَلَوْ شَآءَ

को ज़ुल्म से हलाक कर दे जब के वहाँ वाले इस्लाह कर रहे हों। और अगर आप का

رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ

रब चाहता तो तमाम इन्सानों को एक उम्मत बना देता। और ये बराबर इखतिलाफ

مُخْتَلِفِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ

करते रेहते हैं। मगर जिन पर आप के रब ने रहम किया। और इसी वजह से अल्लाह ने उन को पैदा किया है।

وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ

और आप के रब का कलिमा ताम्म हो कर रहा के मैं इन्सानों और जिन्नात सब से जहन्नम को

وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ

ज़रूर भरूंगा। और हम पैग़म्बरों के क़िस्सों में से आप के सामने

مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ

बयान करते हैं के हम इस से आप के दिल को मज़बूत करें। और इन क़िस्सों में आप के

فِىْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَقُلْ

पास हक़ और नसीहत और ईमान वालों के लिए याददिहानी आई है। और आप फरमा दीजिए

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا
उन से जो ईमान नहीं लाते के तुम अपनी जगह पर रेह कर अमल करते रहो, हम भी

عٰمِلُوْنَ ۝۱۲۱ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝۱۲۲ وَلِلّٰهِ غَيْبُ
अमल कर रहे हैं। और तुम इन्तिज़ार करो, हम भी मुन्तज़िर हैं। और अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की छुपी

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ
हुई चीज़ों का इल्म है और उसी की तरफ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे, तो आप उसी की इबादत कीजिए

وَ تَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۲۳ ع
और उसी पर तवक्कुल कीजिए। और आप का रब तुम्हारे अमल से बेखबर नहीं है।

اٰيَاتُهَا ۱۱۱ (۱۲) سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ (۵۳) رُكُوْعَاتُهَا ۱۲

उस में १११ आयतें हैं सूरह यूसुफ मक्का में नाज़िल हुई और १२ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝۱ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ
अलिफ लाम रॉ। ये साफ साफ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं। यक़ीनन हम ने उसे

قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝۲ نَحْنُ نَقُصُّ
अरबी कुरआन बना कर उतारा है ताके तुम समझ सको। हम आप के सामने

عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا
बेहतरीन क़िस्सा बयान करते हैं इस कुरआन के ज़रिए जो हम ने आप की तरफ

الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝۳
वही किया। और यक़ीनन इस से पेहले आप बेखबर लोगों में से थे।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ
जब के यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने अब्बा से कहा ऐ मेरे अब्बा! मैं ने ग्यारा

كَوْكَبًا وَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝۴
सितारे और सूरज और चाँद को देखा, मैं ने उन्हें देखा के मुझे सज्दा कर रहे हैं।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ
याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे बेटे! अपना ख्वाब अपने भाइयों के सामने बयान मत करना

فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ
वरना वो तेरे खिलाफ तदबीर करेंगे। यक़ीनन शैतान इन्सान का खुला

مُّبِيْنٌ ۝٥ وَ كَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ
दुशमन है। और इसी तरह तेरा रब तुझे मुन्तखब करेगा और तुझे

مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ
ख्वाबों की ताबीर का इल्म देगा और अपनी नेअमत तुझ पर इत्माम तक पहोंचाएगा

وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ
और आले याकूब पर भी जैसा के उसे इत्माम तक पहोंचाया इस से पेहले तेरे अजदाद

ع مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦
इब्राहीम और इसहाक़ (अलैहिमस्सलाम) पर। यक़ीनन तेरा रब इल्म वाला, हिक्मत वाला है।

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝٧
यक़ीनन यूसुफ (अलैहिस्सलाम) और उन के भाइयों में सवाल करने वालों के लिए बहोत सी निशानियाँ थीं।

اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَ اَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا
और वो वक़्त क़ाबिले ज़िक्र है जब के उन्हों ने कहा के यूसुफ और उन का भाई हमारे अब्बा को हम से ज़्यादा महबूब हैं

وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۝٨ اِقْتُلُوْا
हालांके हम मज़बूत जमाअत हैं। यक़ीनन हमारे अब्बा अलबत्ता खुली ग़लती में हैं। तुम यूसुफ

يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ
को क़त्ल कर दो या उसे किसी ज़मीन में फैंक दो तो तुम्हारे लिए तुम्हारे अब्बा की तवज्जुह खालिस रेह जाएगी

وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝٩ قَالَ قَآئِلٌ
और उस के बाद तुम अच्छे लोग बन जाना। उन में से किसी केहने वाले

مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ
ने कहा के तुम यूसुफ को क़त्ल मत करो बल्के उसे कुंवें की तारीकियों में फैंक दो

يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝١٠
के उसे गुज़रने वाले काफलों में से कोई उठा लेगा, अगर तुम ऐसा करने वाले हो।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا
उन्हों ने कहा के ऐ हमारे अब्बा! आप को क्या हुवा के आप हम पर मुतमइन नहीं यूसुफ के बारे में हालांके हम यक़ीनन

لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ﴿۱۱﴾ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَ يَلْعَبْ

उस के खैरख्वाह हैं। आप उसे हमारे साथ कल को भेज दीजिए के वो खाए और खेले

وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿۱۲﴾ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا

और यक़ीनन हम उस की हिफाज़त करेंगे। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन मुझे ये बात ग़मगीन करती

بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ

है के तुम उसे ले जाओ और मैं डरता हूँ इस से के उसे भेड़िया खा जाए इस हाल में के तुम उस से

غٰفِلُوْنَ ﴿۱۳﴾ قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ

बेखबर हो। उन्हों ने कहा के अगर उस को भेड़िया खा जाए इस हाल में के हम मज़बूत नौजवान हैं, यक़ीनन तब तो हम

اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ

उस वक़्त खसारे वाले होंगे। फिर जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को ले कर गए और उन्हों ने इत्तिफाक़ कर लिया इस

فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ

बात पर के यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को कुवें की तारीकियों में डाल दें। और हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की तरफ

هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَ جَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً

वही की के ज़रूर आप उन को जतलाओगे उन की ये हरकत इस हाल में के उन को पता भी नहीं होगा। और वो अपने अब्बा के पास

يَّبْكُوْنَ ﴿۱۶﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَ تَرَكْنَا

इशा के वक़्त रोते हुए आए। केहने लगे के ऐ हमारे अब्बा! यक़ीनन हम दौड़ने लगे थे और हम ने

يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ

छोड़ दिया था यूसुफ को अपने सामान के पास, फिर उसे भेड़िया खा गया। और आप हम पर यकीन करने वाले

لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ الثلثة

नहीं हैं अगर्चे हम सच्चे हों। और वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की क़मीस पर झूठा खून ले कर

كَذِبٍ ۭ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ

आए। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया बल्के तुम्हारे लिए तुम्हारे नफ्सों ने एक अम्र को मुज़य्यन किया है। अब तो सब्र

جَمِيْلٌ ۭ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَجَآءَتْ

ही बेहतर है। और अल्लाह मददगार है उस बात पर जो तुम बयान करते हो। और एक क़ाफला

سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۭ قَالَ يٰبُشْرٰى

आया, फिर उन्हों ने अपने पानी लाने वाले को भेजा तो उस ने अपना डोल लटकाया। तो वो केहने लगा ओ खुशखबरी हो!

هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾
ये तो लड़का है। और उनहों ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को सामान बना कर छुपा दिया, और अल्लाह खूब जानते हैं उस हरकत को जो वो करते थे।

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۭ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ
और उन्हों ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को बेच दिया मामूली क़ीमत के बदले में, गिने चुने चन्द दराहिम के बदले में। और वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

ع ٢ ١٤ ١٢ مِنَ الزَّاهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ
में बेरग़बती करने वालों में से थे। और उस शख्स ने जिस ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को खरीदा मिस्र से उस

لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ
ने अपनी बीवी से कहा के तू इन का ठिकाना अच्छा रख, हो सकता है के वो हमें नफा दे

اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۡ
या हम उसे लड़का ही बना लें। और इस तरह हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को उस मुल्क में कुदरत दी।

وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ
और इस लिए ताके हम उन्हें ख्वाबों की ताबीर सिखलाएं। और अल्लाह अपने हुक़्म पर ग़ालिब

عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ
हैं लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। और जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) अपनी जवानी को पहोंच

اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾
गए, तो हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को हिक्मत और इल्म दिया। और इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ
और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की तलबगार हुई वो औरत जिस के कमरे में यूसुफ (अलैहिस्सलाम) थे और तमाम

الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ
दरवाज़े उस ने बन्द कर लिए और केहने लगी जल्दी आ जाओ। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अल्लाह की पनाह! अज़ीज़े मिस्र

رَبِّىْۤ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ
मेरे मुरब्बी ने बहोत अच्छी तरह मुझे रखा है। यक़ीनन ज़ालिम फलाह नहीं पाते। यक़ीनन उस औरत ने

هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ
यूसुफ (अलैहिस्सलाम) का इरादा कर ही लिया था। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) भी उस का इरादा कर लेते अगर अपने रब के बुरहान को न देखते।

كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ
इसी तरह (हम ने किया) ताके हम यूसुफ (अलैहिस्सलाम) से फेर दें बुराई और बेहयाई को। यक़ीनन यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ

हमारे खालिस किए हुए बन्दों में से थे। और दोनों दरवाज़े की तरफ दौड़े और औरत (जुलैखा) ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ

की क़मीस पीछे से फाड़ दी और दोनों ने जुलैखा के शौहर को पाया दरवाज़े के पास। जुलैखा केहने लगी के उस

مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ

शख्स की सज़ा क्या है जो आप की बीवी के साथ बुराई का इरादा करे सिवाए इस के के उस को क़ैद कर दिया जाए या उसे

اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَ شَهِدَ شَاهِدٌ

दर्दनाक सज़ा दी जाए? यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये औरत तो खुद मुझ से मेरी तालिब हुई थी और जुलैखा

مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ

के घर वालों में से एक गवाही देने वाले ने गवाही दी के अगर उस का कुर्ता आगे से फटा हुवा है तो जुलैखा सच्ची

وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾ وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ

है और यूसुफ झूठों में से है। और अगर उन का कुर्ता पीछे से फटा हुवा

مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ

है तो जुलैखा झूठी है और यूसुफ सच्चों में से है। फिर जब अज़ीज़े मिस्र ने उन का कुर्ता देखा जो

قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ

फटा हुवा था पीछे से तो उस ने कहा के यक़ीनन ये तुम्हारी मक्कारियों में से है। यक़ीनन तुम्हारा मक्र

عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ؔ وَاسْتَغْفِرِيْ

बड़ा भारी होता है। ऐ यूसुफ! तुम इस से ऐराज़ करो। और (ऐ जुलैखा!) तू अपने गुनाह के लिए

لِذَنْۢبِكِ ۚۖ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿٢٩﴾ۧ وَ قَالَ نِسْوَةٌ ع ٣ ١٣ ٣

इस्तिग़फार कर। यक़ीनन तू ही क़ुसूरवार है। और शेहर की औरतों

فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ

ने कहा के अज़ीज़े मिस्र की बीवी अपने गुलाम से उसी का मुतालबा करती है।

قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

यक़ीनन उस की महब्बत उस के दिल के अन्दर घुस गई है। यक़ीनन हम उसे खुली ग़लती में देख रही हैं।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ

फिर जब उस ने उन का मक्र सुना तो उस ने उन को बुलाने के लिए आदमी भेजा और उन के लिए एक बैठक

لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا
(मजलिस) तय्यार की और उन औरतों में से हर एक को छुरी दी

وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ
और कहा के यूसुफ! तुम उन के सामने निकल कर आओ। फिर जब उन औरतों ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को देखा तो शशदर रेह

اَيْدِيَهُنَّ وَ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ
गईं और उन्हों ने अपने हाथ काट लिए और केहने लगीं अल्लाह की पनाह! ये इन्सान नहीं है। ये नहीं है

اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِیْ لُمْتُنَّنِیْ فِيْهِ ؕ
मगर एक बुज़ुर्ग फरिशता। ज़ुलैखा केहने लगी फिर यही तो वो है जिस के बारे में तुम मुझे मलामत करती थीं।

وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَئِنْ
यक़ीनन मैं उस की तालिब हुई, लेकिन उस ने मासूम रेहना चाहा। और अगर वो

لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾
नहीं करेगा वो जिस का मैं उसे हुक्म दे रही हूँ तो यक़ीनन उसे कैद कर दिया जाएगा और वो ज़लील लोगों में से हो जाएगा।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَیَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِیْۤ اِلَيْهِ ۚ
यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब! क़ैदखाना मुझे ज़्यादा महबूब है उस काम से जिस की तरफ ये मुझे बुला रही हैं।

وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّیْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ
और अगर तू मुझ से उन की मक्कारी को नहीं फेरेगा तो मैं उन की तरफ माइल हो जाऊँगा और मैं जाहिलों में

مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ
से बन जाऊँगा। उस के रब ने उस की दुआ क़बूल की, फिर यूसुफ (अलैहिस्सलाम) से उन के मक्र को फेर दिया।

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا
यक़ीनन वो सुनने वाला, इल्म वाला है। फिर उन्हें खयाल आया इस के बाद के उन्हों ने बहोत सी निशानियाँ

ع ٤ الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ
देख लीं के यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को एक वक्त तक के लिए क़ैद कर दें। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के साथ क़ैदखाने में दाखिल

فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ اِنِّیْۤ اَرٰىنِیْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ
हुए दो नौजवान। उन में से एक ने कहा के यक़ीनन मैं ख्वाब देख रहा हूँ के मैं शराब निचोड़ रहा हूँ।

وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّیْۤ اَرٰىنِیْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِیْ خُبْزًا تَاْكُلُ
और दूसरे ने कहा के मैं ख्वाब देख रहा हूँ के मैं अपने सर पर रोटियाँ उठाए हुए हूँ जिस में से

الطَّيْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٣٦

परिन्दे खा रहे हैं। ऐ यूसुफ! आप हमें इस की ताबीर दीजिए। यक़ीनन हम आप को नेक लोगों में से देख रहे हैं।

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम्हारे पास नहीं आएगा वो खाना जो तुम्हें खाने को दिया जाता है मगर मैं तुम्हें उस की ताबीर

قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ؕ اِنِّيْ

बतलाऊँगा इस से पेहले के वो तुम्हारे पास आए। ये उन उलूम में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखलाए हैं। यक़ीनन

تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

मैं ने उस क़ौम का मज़हब छोड़ दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखती और जो आखिरत का इन्कार करने

كٰفِرُوْنَ ۝٣٧ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ

वाली है। और मैं ने अपने बाप दादा इब्राहीम और इसहाक़ और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) की मिल्लत का इत्तिबा

وَيَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ

किया है। हमारे लिए जाइज़ नहीं है के हम अल्लाह का शरीक ठेहराएं किसी भी चीज़ को।

ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

ये अल्लाह का हम पर फज़्ल है और तमाम इन्सानों पर भी, लेकिन अक्सर

النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝٣٨ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ

लोग शुक्र अदा नहीं करते। ऐ क़ैदखाने के साथियो! क्या अलग अलग

مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٣٩ مَا تَعْبُدُوْنَ

रब बेहतर हैं या यकता ग़ालिब अल्लाह बेहतर है? तुम अल्लाह को छोड़ कर के

مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ

इबादत नहीं करते मगर चन्द नामों की जो तुम और तुम्हारे बाप दादा ने रख रखे हैं, अल्लाह ने

اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ

उस पर कोई दलील नहीं उतारी। हुक्म तो सिर्फ अल्लाह ही का चलता है। जिस ने हुक्म दिया है

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

के इबादत मत करो मगर उसी की। यही सीधा दीन है, लेकिन लोगों

النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤٠ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا

में से अक्सर जानते नहीं हैं। ऐ क़ैदखाने के साथियो! अलबत्ता तुम में से एक

فَيَسۡقِیۡ رَبَّهٗ خَمۡرًا ۚ وَاَمَّا الۡاٰخَرُ فَيُصۡلَبُ فَتَاۡكُلُ الطَّيۡرُ
वो अपने बादशाह को शराब पिलाएगा। और अलबत्ता दूसरा उसे सूली दी जाएगी, फिर उस के सर में से

مِنۡ رَّاۡسِهٖ ؕ قُضِیَ الۡاَمۡرُ الَّذِیۡ فِيۡهِ تَسۡتَفۡتِيٰنِ ﴿٤١﴾
परिन्दे खाएंगे। उस मुआमले का फैसला हो चुका जिस के बारे में तुम पूछ रहे हो।

وَقَالَ لِلَّذِیۡ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنۡهُمَا اذۡكُرۡنِیۡ
और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उस शख्स से फरमाया के जिस के मुतअल्लिक़ आप ने गुमान किया के वो उन दोनों में से नजात पाने वाला

عِنۡدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنۡسٰهُ الشَّيۡطٰنُ ذِكۡرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِی السِّجۡنِ
है के तू मुझे अपने बादशाह के यहाँ याद रखना। फिर शैतान ने उसे भुला दिया यूसुफ (अलैहिस्सलाम) का बादशाह से तज़किरा करना, फिर

بِضۡعَ سِنِيۡنَ ﴿٤٢﴾ؑ وَقَالَ الۡمَلِكُ اِنِّیۡۤ اَرٰى سَبۡعَ بَقَرٰتٍ ع ٥ ١٥
यूसुफ (अलैहिस्सलाम) क़ैदखाने में कई साल ठेहरे रहे। और बादशाह ने कहा के यक़ीनन मैं सात मोटी गाएं देख रहा

سِمَانٍ يَّاۡكُلُهُنَّ سَبۡعٌ عِجَافٌ وَّ سَبۡعَ سُنۡۢبُلٰتٍ خُضۡرٍ
हूँ जिन को खा रही हैं सात दुबली गाएं और सात सब्ज़ खोशों को देख रहा हूँ और दूसरे सात खुश्क खोशों

وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰۤاَيُّهَا الۡمَلَاُ اَفۡتُوۡنِیۡ فِیۡ رُءۡيَایَ
को देख रहा हूँ। ऐ दरबारियो! तुम मुझे बताओ मेरे ख्वाब के बारे में

اِنۡ كُنۡتُمۡ لِلرُّءۡيَا تَعۡبُرُوۡنَ ﴿٤٣﴾ قَالُوۡۤا اَضۡغَاثُ اَحۡلَامٍ ۚ
अगर तुम ख्वाब की ताबीर जानते हो। उन्हों ने कहा के ये तो ज़ेहनी तसव्वुरात ही के ख्वाब हैं।

وَمَا نَحۡنُ بِتَاۡوِيۡلِ الۡاَحۡلَامِ بِعٰلِمِيۡنَ ﴿٤٤﴾ وَقَالَ الَّذِیۡ
और हम ऐसे ख्वाबों की ताबीर नहीं जानते। और उस शख्स ने कहा जिस ने दो आदमियों में से

نَجَا مِنۡهُمَا وَادَّكَرَ بَعۡدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمۡ بِتَاۡوِيۡلِهٖ
नजात पाई थी और उस को याद आया एक तवील ज़माने के बाद, उस ने कहा के मैं तुम्हें इस ख्वाब की ताबीर बतलाऊँगा,

فَاَرۡسِلُوۡنِ ﴿٤٥﴾ يُوۡسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيۡقُ اَفۡتِنَا فِیۡ سَبۡعِ
इस लिए तुम मुझे भेजो। ऐ यूसुफ! ऐ सिद्दीक़! आप हमें ताबीर दीजिए सात मोटी

بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاۡكُلُهُنَّ سَبۡعٌ عِجَافٌ وَّسَبۡعِ
गायों के बारे में जिन को खा रही हैं सात दुबली गाएं और सात सब्ज़ खोशों

سُنۡۢبُلٰتٍ خُضۡرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّیۡۤ اَرۡجِعُ اِلَى النَّاسِ
के बारे मैं और दूसरे सात खुश्क खोशों के बारे में, ताके मैं उन लोगों के पास वापस जाऊँ

لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ۝٤٦ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ
ताके उन्हें इल्म हो। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम खेती करोगे लगातार सात साल।

فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا
फिर जो तुम खेती करो उसे छोड़ दो उस के खोशे में मगर थोड़ा उस में से

مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ۝٤٧ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ
जो तुम खाओ। फिर उस के बाद सात सख्त साल आएंगे

يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ۝٤٨
जो खा जाएंगे उसे जो तुम ने उन के लिए पेहले से तय्यार किया है मगर थोड़ा उस में से जो तुम महफ़ूज़ रखो।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ
फिर उस के बाद एक साल आएगा जिस में लोगों पर बारिश बरसाई जाएगी

وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ۝٤٩ۧ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ ع ٦ ١٢
और उस में वो फल निचोड़ेंगे। और बादशाह ने कहा के तुम उसे मेरे पास ले आओ।

فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْئَلْهُ مَا بَالُ
चुनांचे जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास क़ासिद आया, तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तू अपने बादशाह के पास वापस जा,

النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ
फिर उस से पूछ के उन औरतों का क्या हाल है जिन्हों ने अपने हाथ काट दिए थे। यक़ीनन मेरा रब उन के मक्र को खूब

عَلِيْمٌ۝٥٠ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ
जानता है। अज़ीज़े मिस्र ने पूछा के तुम्हारा क्या वाकिआ है जब तुम ने यूसुफ को उस की ज़ात से वरग़लाया?

عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ۭ
उन्हों ने कहा के अल्लाह की पनाह! हम उन के बारे में कोई बुराई नहीं जानते। अज़ीज़े मिस्र की बीवी ने कहा के अब हक़ वाज़ेह

قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۡ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ
हो गया। मैं ने उस को वरग़लाया था (मुतालबा किया था उस की ज़ात का, न किसी खिदमत का) उस की ज़ात से और यक़ीनन वो सच्चों में से

عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ۝٥١ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ
है। (यूसुफ अलैहिस्सलाम ने फरमाया ये मैं ने अपनी बराअत के लिए सब कुछ बर्दाश्त किया) ये इस लिए ताके वो (अज़ीज़े मिस्र)

لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ۝٥٢
जान ले के मैं ने उस से खयानत नहीं की उस की ग़ैबत में और ये के अल्लाह खयानत करने वालों के मक्र को चलने नहीं देते।